REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2020

महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्र में 'अतीत के चलचित्र'

काशीनाथ डी. डब्लू.
अतिथी व्याख्याता,
कला अध्ययन विभाग, गुलबर्गा विश्वविद्यालय.

सारांश:

हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य की एक लंबी परंपरा है। मानव को केन्द्र बिन्दु बनाकर बहिष्कृत समाज की पीड़ा को स्वर देने वाले इस साहित्य की मुख्य विधा प्रारम्भ में आत्मकथा थी, जो अनुभव की गई वास्तविकता पर आधारित है। बाद में, साहित्य की अन्य विधाओं के साथ, दलित दर्द को रेखाचित्रों और संस्मरणों में अभिव्यक्ति मिली। वास्तविकता पर आधारित इन विधाओं में कल्पना के स्थान पर सत्य की समग्रता और लेखक की भावनाओं, स्मृतियों और जीवन-मूल्यों का अद्भुत संगम है। महादेवी वर्मा सर्वश्रेष्ठ हिंदी संस्मरण लेखक और स्केचर हैं। उनके ग्यारह संस्मरण रेखाचित्रों का संग्रह 'अतीत के चलचित्र' १९४१ में प्रकाशित हुआ था, जिसमें आठ रेखाचित्र दलित वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन यादगार रेखाचित्रों के सभी पात्र विनम्र, विवश लेकिन मेहनती और रचनात्मक हैं। पुरुष पात्रों में तप, उत्साही शक्ति और आत्म-गौरव होता है, जबकि महिला पात्रों में एक गरिमापूर्ण भावनात्मक कमजोरी होती है। महादेवी जी ने अपने जीवन से जुड़े इन पात्रों के व्यक्तित्व के सकारात्मक पहलुओं पर विशेष जोर देते हुए कई सामाजिक विकृतियों की चर्चा की और उन्हें हर संभव मदद देकर समाज सुधार की दिशा में एक सार्थक पहल भी की। वास्तविक जीवन पर आधारित होने के कारण ये रेखाचित्र न केवल जीवन के अनेक रंग प्रस्तुत करते हैं बल्कि महादेवी जी की गहरी भावनाओं के भी प्रतीक हैं। जीवन का स्पंदन है और आत्मा का महान स्पंदन है, तो अछूतों का भी संदेश है। दलित-संवेदना पर आधारित ये रचनाएँ सत्यम, शिवम् और सुन्दरम की प्राण प्रतिष्ठा करने के साथ-साथ नवीन जागरण को शंखा भी देती है।

परिचय:

हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य की एक लंबी परंपरा है। इसका केंद्र बिंदु मानवीय है और इस साहित्य का मुख्य उद्देश्य बहिष्कृत समाज की पीड़ा को आवाज देना है। प्रारंभ में दलित साहित्य की मुख्य विधा आत्मकथा थी, जो अनुभवी वास्तविकता पर आधारित है। बाद में, दलित साहित्य की रचना आलोचनात्मक ग्रंथों, शोध ग्रंथों और आलोचनात्मक ग्रंथों में भी की गई। संस्मरण और रेखाचित्र साहित्य की अपेक्षाकृत नई विधाएँ हैं। उनकी नींव भी वास्तविकता पर आधारित है और कल्पना के बजाय सत्य की समग्रता पाई जाती है। इनमें लेखक की भावनाओं, स्मृतियों और जीवन-मूल्यों का अनूठा संगम है। महादेवी जी हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ संस्मरण लेखिका और रेखाचित्र है। उनके संस्मरणों में गद्य का शुद्ध रूप, जीवन की जीवंतता और आत्मा का महान स्पंदन देखा जा सकता है। कुशल चित्रकार होने के साथ-साथ वह अच्छे रेखाचित्र लिखने में भी माहिर हैं। वैसे भी रेखाचित्र लिखने की कला चित्रकला से ही प्रेरित है। यद्यपि महादेवी की रचनाओं को :संस्मरण कथाएँ' या 'रेखाचित्र' के रूप में समझने में संघर्ष है, फिर भी उन्हें संस्मरणात्मक रेखाचित्र कहना अधिक समीचीन है। लेखक ने उन्हें 'स्मृति कथाएँ' भी कहा है, उन्हें 'स्मृति की सुरक्षित सीमा' से बाहर लाया गया है और इन संग्रहों के लिए 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' शब्दों का प्रयोग किया गया है।

हिन्दी साहित्य में महादेवी वर्मा के नाम को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। एक प्रख्यात साहित्यकार होने के साथ-साथ वह एक चित्रकार, स्वतंत्रता सेनानी और शिक्षाविद भी थीं। उन्होंने अपने काव्य-लेखन से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है, जिसके कारण उनकी गिनती छायावाद के महत्वपूर्ण स्तंभों में होती है, साथ ही उन्होंने अपने लेखन से हिन्दी साहित्य के गद्य-भंडार की विभिन्न विधाओं को भी समृद्ध किया है। महादेवी की कलम के स्पर्श से चित्र और संस्मरण दोनों जीवंत हो उठे हैं। रेखाचित्र और संस्मरण साहित्य की ऐसी विधाएं हैं, जो एक-दूसरे की सीमाओं को लांघती रहती हैं। संस्मरण विधा में लेखक अपने और अपनी स्मृति पर पड़ने वाले प्रभाव के अनुसार अपने जीवन से जुड़े व्यक्तियों और घटनाओं को चित्रित करता है। साथ ही रेखाचित्र में लेखक विषय वस्तु का ऐसा शब्दांकन पूरी तटस्थता के साथ करता है, जिससे पात्र की आकृति या दृश्य पाठक के सामने एक वास्तविकता बन जाता है। महादेवी के रेखाचित्र और संस्मरण दोनों ही शैलियों की सीमाओं को पार करते हैं और मिश्रित प्रतीत होते हैं। शायद इसीलिए रामचंद्र तिवारी ने इन्हें 'यादगार

रेखाचित्र' कहा है। कामेश्वर शरण सहाय ने इस संदर्भ में लिखा है, 'महादेवी के स्पष्ट रूप से निर्धारित रेखाचित्रों में भी, उनका व्यक्तित्व इतना लीन हो गया है कि वह आत्मीयता की प्रचुरता के कारण एक संस्मरण बन गई है। इसके विपरीत, उनके संस्मरणों के रेखाचित्र की परिणति भी उतनी ही सत्य है।

'अतीत के चलचित्र' १९४१ ई. में प्रकाशित हुआ था। इनमें संकलित रचनाओं में उन्होंने समाज की, असमानता के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त किया और उपेक्षित, असहाय, घिनौने, दयनीय लेकिन मेहनती और कर्तव्यनिष्ठ जीवन को आवाज दी। शचिरानी गुःतु के शब्दों में, 'जीवन के जो चित्र उन्होंने सामान्य संवेदनशीलता के आधार पर गहरे और हल्के रंगों के संयोजन से खींचे हैं, वे सार्थक अनुभवों के आधार पर वास्तविकता का सच्चा प्रतिनिधित्व है।'

महादेवी वर्मा के संस्मरणों में आम लोगों का जीवन संघर्ष:

हिन्दी साहित्य में लेखकों ने अक्सर नेताओं, साहित्यकारों, कलाकारों जैसे विशिष्ट लोगों के बारे में संस्मरण लिखे हैं, इस दृष्टि से देखा जाए तो 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएं' की कृतियों के विषय सामान्य लोग हैं। आम लोगों में भी वे लोग जो परिवार की उपेक्षा और समाज के तिरस्कार का पात्र बन गए हैं। उनकी करुणामयी कहानियों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों और अन्याय का चेहरा भी सामने आता है। 'अतीत के चलचित्र' में जिन ग्यारह स्मृति चित्रों को चित्रित किया गया है, वे हैं - राम, मारवाड़ी विधवा भाभी, बिंदा, सबिया, बिट्टो, बाल विधवा, घीसा, एक माँ की बेटी जिसे समाज में अशुद्ध कहा जाता है, एलोपिडीन, बदलू और राधिया, लछमा। महादेवी ने इन तस्वीरों को कोई नाम नहीं दिया है, शायद इसीलिए ये चलचित्र की तरह चलती नजर आ रही हैं।

'अतीत के चलचित्र' के किरदार में अपनी सौतेली मां के अत्याचार से घर छोड़कर चली गई बुंदेलखंडी किशोरी श्यामा को महादेवी की मां ने अपने तीन बच्चों की देखभाल का जिम्मा सौंपा था। महादेवी को हमेशा से ही भाभी चाहिए थी, जिसकी कमी मारवाड़ी विधवा भाभी ने पूरी की। बिंदा महादेवी की बचपन की सहेली थी, जिनके जीवन को उनकी मां ने कष्टमय बना दिया। जीवन में कठिन संघर्ष करने वाली सबिया कड़ी मेहनत की प्रतिमूर्ति है। पैंतीस वर्षीय रोगी बिट्टो, परिवार से उपेक्षित, जिसका देवर उसे बोझ समझता है, चौबीस वर्षीय व्यक्ति से शादी करता है। अठारह वर्षीय अविवाहित बाल विधवा, जो समाज के डर से भी अपने बच्चे को नहीं छोड़ना चाहती और महादेवी उसे संरक्षण देती है। गुरु-भक्ति का आदर्श प्रस्तुत करती मासूम घीसा। समाज में अपवित्र कही जाने वाली एक माँ की बेटी, जिससे एक साहसी युवक ने शादी की, लेकिन बीमारी के कारण पति की मृत्यु के बाद, उसके ससुराल वाले उसका साथ नहीं देते, वह फिर से अकेली रह जाती है। अंधा, मेहनती अलोपिडिन, जो अपनी पत्नी के धोखे का शिकार हो जाता है। बदलू और राधिया, कुम्हार दंपत्ति अत्यधिक गरीबी में जी रहे हैं। कर्तव्यपरायण और सरल पहाड़ी लड़की लछमा।

'अतीत के चलचित्र' के सभी पात्रों ने महादेवी को अपनी जीवंतता से प्रभावित किया है और महादेवी को उनसे जोड़ा गया है। इस कृति की प्रस्तावना में महादेवी लिखती हैं, ष्इन संस्मरणों का आधार प्रदर्शनी का विषय नहीं, बल्कि मेरे अटूट प्रेम का चरित्र रहा है। माता के अत्याचारों से त्रस्त राम महादेवी समेत तीन भाइयों और बहनों की देखभाल करते हुए घर से भाग गए और उन पर अपने स्नेह की वर्षा की। उनकी नवविवाहिता पत्नी इस सिलसिले में रोड़ा बन गई। स्नेह के भूखे राम आश्रय पाने में इतने मशगूल हो जाते हैं कि बच्चों का पूरा ख्याल रखते हैं।

बच्चे अपनी नवविवाहित पत्नी के अशिष्ट व्यवहार को समझते हैं और उसे परेशान करते हैं, महादेवी की माँ उसे परित्यक्त पत्नी के पास भेजती है। इस स्मृति-चित्र में राम बचपन की मधुर स्मृति के रूप में विद्यमान है। राम की तरह महादेवी की बचपन की सहेली बिंदा भी विमाता के अत्याचारों से त्रस्त है। उसकी मृत्यु के बाद ही उसे इन अत्याचारों से मुक्ति मिलती है। राम के पास भागने का विकल्प था, लेकिन बिंदा के पास ऐसा कोई विकल्प नहीं था। एक ओर जहां मां के रूप में नारी प्रेम का अथाह खजाना है वहीं इस कार्य में वह मां के रूप में क्रूरता की प्रतीक बनकर उभरी है. यह एक लोकप्रिय कहावत है कि एक माँ माँ नहीं हो सकती। लेकिन बिंदा की नई मां अपने बेटे से बहुत प्यार करती है, लेकिन बिंदा को नंगे पांव धूप में खड़े रहने और एक डंडे से बांधे रखने की सजा भी देती है। यहाँ एक ही स्त्री के दो रूप दिखाई देते हैं। लड़की को उम्मीद है कि बिंदा में एक गृहिणी के समान कौशल होगा और वह घर के सभी काम करवाएगी। कड़ी मेहनत के बाद भी बिंदा को न तो माँ का प्यार मिलता है और न ही पिता का। यदि राम और बिंदा को अपने परिवार में उचित स्नेह मिलता, तो उन्हें यह दुर्दशा नहीं होती।

आठ वर्षीया महादेवी की भाभी की चाह उन्नीस वर्षीय मारवाड़ी विधवा को आकर्षित करती है। उस समय समाज में प्रचलित कठोर कानूनों के कारण भाभी को परिवार का अत्याचार सहना पड़ा। अपने खाली समय में एक अंधेरे घर में एकांत जीवन जीने के बाद नाश्ता खाकर घर के कामों में लगे रहना उसकी नियति बन गई थी। मारवाड़ी सेठ की बेटी जब भी मायके आती थी तो अपनी भाभी को शारीरिक रूप से प्रताड़ित करती थी। वह महादेवी की संगति से दुख के पलों को भूलने की कोशिश करती है। महादेवी ने उन्हें अपने ही हाथ से कशीदाकारी वाला रंग-बिरंगा घूंघट उपहार में दिया, परिवार की नजरों में विधवा रंग के कपड़े पहनना एक बहुत बड़ा अपराध था, जिसे तब तक पीटा जाता था जब तक कि वह बेहोश न हो जाए। यह कैसा समाज था, जहां अनाथों और विधवाओं के आंसू पोंछने वाला कोई नहीं था। उनका जीवन कठोर तपस्या में ढाला गया था, उनकी भावनाओं और इच्छाओं का कोई मूल्य नहीं था। एक अनाथ, एक विधवा और एक महिला होने के कारण समाज उसे इतनी कठोर सजा दे रहा था।

बिट्टो और बाल विधवा मां का भी यही हाल है। बिट्टो भी एक बाल विधवा थी, जब तक उसके माता-पिता जीवित थे, वह खुशी से रहती है, लेकिन उसके माता-पिता की मृत्यु के बाद, उसका देवर उसे एक बोझ मानता है और इस बोझ से छुटकारा पाने के लिए, वह पचास से शादी करती है- चार साल का। बूढ़े की मौत के बाद बिट्टो फिर से अकेला रह जाता है। एक बॉडी वर्कर की बेटी को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए एक युवक उससे शादी कर लेता है, लेकिन उसकी मौत के बाद अकेली विधवा बहू को स्वीकार नहीं करती है। एक और बाल विधवा किशोरावस्था में अविवाहित मां बन जाती है। एक मासूम अविवाहित लड़की को पुरुष अपनी वासना पूर्ति का साधन मानता था। समाज के डर से उसके परिवार वाले उसे अपने बच्चे को छोड़ने के लिए कहते हैं, लेकिन लड़की तैयार नहीं होती है। महादेवी ने उसे अपने संरक्षण में स्वीकार कर लिया। महादेवी समाज की उस स्थिति पर सवाल उठाती हैं जो विधवा को अपने बच्चे को त्यागने के लिए मजबूर करती है, केवल इसलिए कि या तो उस वंचित समाज में लौटकर, सती ने गंगा-स्नान, उपवास, पूजा-पाठ आदि के

माध्यम से विधवा को प्रच्छन्न किया। सक्षम होने के लिए गलतियों और गलतियों की सुविधा पाने के लिए या विधवा के आश्रम में जानवर का माल नीलामी पर चढ़ जाता था और कभी कम पर बेचा जाता था, कभी उच्च बोली पर, नहीं तो जहर की एक-एक बूंद पीकर धीरे-धीरे मर जाता था।

पितृसत्ताक और स्त्री की दुर्दशा:

तत्कालीन समाज में विधवाओं का जीवन बहुत कष्टदायक था। ये महिलाएं न तो अपने मायके में सुख से रह सकती थीं और न ही ससुराल में। ये वृत्तांत हमें सोचने पर मजबूर कर देते है कि एक महिला का असली घर क्या होता है और एक परिवारहीन, अनाथ महिला के लिए कोई जगह नहीं होती है। महिलाओं की यह दुर्दशा दर्शाती है कि तत्कालीन समाज में उनका जीवन नर्क जैसा था। महिलाओं की दुर्दशा का कारण केवल पुरुष ही नहीं बल्कि पितृसत्तात्मक मानसिकता थी। इसी सोच के कारण महिलाएं भाभी, ननद, सास के रूप में अन्य महिलाओं को प्रताड़ित करती है। विधवा महिलाओं को धन और संपत्ति के लालच में ससुराल और मायके दोनों में प्रताड़ित करना पड़ता है। रीति-रिवाजों के नाम पर महिलाओं के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था। बिट्टो के संदर्भ में, महादेवी वर्मा ने पितृसत्तात्मक समाज के बारे में लिखा है, 'अपनी हार को जबरदस्ती जय नाम देने के लिए, शायद वह इसे कई विषम परिस्थितियों और संकीर्ण सामाजिक बंधनों में बांधने की कोशिश करता रहता है।' धर्म के तथाकथित रक्षाकों ने अपने धर्म की रक्षा का सारा भार महिलाओं पर डाल दिया, एक ही स्थिति में पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए अलग-अलग नियम क्यों है? एक चौवन साल का बच्चा पैंतीस साल की बाल विधवा से तीसरी पत्नी के रूप में शादी कर सकता था, लेकिन बचपन में विधवा हुई महिला के लिए ऐसा कोई प्रावधान नहीं था। इसी तरह घीसा की मां विधवा होने के बाद भी मेहनत कर घीसा का पालन-पोषण करती है।

समाज के पुरुष ही उस पर अपनी वासना भरी निगाह रखते हैं, असफल होने पर वे घीसा के जन्म के बारे में झूठी बातें फैलाते है, ताकि उसे बदनाम किया जा सके। झूठ के किनारे खड़ा सारा गांव घीसा की मां की सच्चाई को नकारता हैद्य परिणामस्वरूप घीसा के परिवार को बहिष्कृत कर दिया जाता है और उसे अपमानित करने का हर संभव प्रयास किया जाता है। एक विधवा, जो आत्मनिर्भरता का जीवन जीना चाहती है, समाज उसे सम्मान से जीने भी नही देता। उसके एकाकी जीवन को और कष्टदायक बना देता है। महिलाओं को सतीत्व घुट्टी की तरह खिलाया जाता था, शायद इसीलिए परित्यक्त सबिया अपने बच्चों और सास की देखभाल के लिए कड़ी मशक्कत करती हैं। जब उसका पति दूसरी महिला के साथ लौटता है तो सबिया उन दोनों की देखभाल करती है। वह उनकी सुख-सुविधाओं का ख्याल रखती हैं। वह एक ऐसे समाज में एक महिला है जहां एक महिला से पृथ्वी की तरह सहिष्णु होने की उम्मीद की जाती है, चाहे वह पुरुष उस पर कितना भी अत्याचार करे। पुरुष के दोषों के लिए कोई सजा नही है, जबकि महिला दुख और संघर्ष को अपने जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा मानने लगती है। महादेवी सबिया को पौराणिक नारीत्व के करीब मानती हैं। सबिया अपने पति को सब कुछ मानती है और उसकी खुशी के लिए कुछ भी करने को तैयार रहती है। वह अपने पति के गलत आचरण का विरोध नहीं करती और न ही उसे अपने पति और बहन के खिलाफ कोई शिकायत है। वह बस जीवन के संघर्ष में व्यस्त रहती है।

अंधी अलोपिडीन के खाते में स्त्री का एक अलग ही रूप दिखाई देता है। अलोपी की नवविवाहिता पत्नी कठिन जीवन जीते हुए अपनी गाढ़ी कमाई लेकर भाग जाती है। जीवन के संघर्ष में लगी अलोपी टूट जाती है और आत्महत्या कर लेती है। एक कुएं में मेंढक की तरह रहने वाले बदलू कुम्हार और उनकी पत्नी राधिया बेहद गरीबी में रहते हैं। बदलू अपने रास्ते से हटना नहीं चाहता है और राधिया वंचित जीवन में अपने कुपोषित बच्चों के साथ खुद को समेटने की कोशिश करती है। इस पर महादेवी ने टिप्पणी की है, 'बदलू जो नहीं संभाल सकता वह राधिया के लिए हानिकारक हो जाता है।' राधिया की मृत्यु के बाद, बदलू कड़ी मेहनत करता है और मूर्तिकार बन जाता है।

निष्कर्ष:

ये 'संस्मरणिय रेखाचित्र' कई मायनों में अनोखे हैं। इन पात्रों की गहराई में प्रवेश करते हुए महादेवी जी ने मानवीय संवेदनाओं के मोतियों को चुना है। उनके द्वारा अपनाए गए उपेक्षित चरित्र भारतीय समाज की ज्वलंत समस्याओं में फंस गए। इस दृष्टि से समाज के प्रति लेखक के सचेतन दृष्टिकोण को व्यक्त करना स्वाभाविक है। उन्होंने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था और परम्परागत संस्कारों पर इतना तीखा प्रहार किया है कि पाठक दंग रह जाता है - 'सामाजिक जीवन की गहरी परतों को छूती इतनी तीक्ष्ण दृष्टि, नारी जीवन की विषमता और शोषण का तीखा आकलन करने वाली ऐसी जागरूक प्रतिभा और विरले ही क्या निम्न वर्गों के असहाय, साधनहीन प्राणियों का ऐसा हृदयस्पर्शी और अनूठा चित्रण मिलेगा।'

महादेवी जी ने अपने रेखाचित्रों में नारी पात्रों को नारी प्रवचन और नारी मुक्ति की परिधि से निकालकर एक व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है। उनके नारी पात्र भी नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं को पाठकों के सामने रखते है। इनमें वर्ग भेद के साथ-साथ महिलाओं की कमजोरी भी है। आर्थिक गरीबी, बाल विवाह, विधवा विवाह और बेमेल विवाह पर उनके विचारों के अलावा, एक व्यक्ति के स्तर पर इन महिला पात्रों के संघर्ष, मातृत्व, बलिदान आदि को सामने लाने का भी लेखा-जोखा है। महादेवी जी ने चित्रण की सिंचाई करते हुए इन रेखाचित्रों के पात्रों ने अपनी करुणा, स्नेह, श्रद्धा और कोमलता से एक ऐसा व्यक्तित्व निर्मित किया है कि वे हमारे आस-पास पाए जाने वाले सामान्य पात्रों की तरह बन जाते है और हमारे दैनिक जीवन से जुड़ जाते है। अत्यंत सरल व्यक्तित्व के होते हुए भी महादेवी जी के ये पात्र हमारी आस्था का आधार बनते हैं, जिनके प्रति पाठकों में सहनशीलता की भावना उत्पन्न होती है और यही कारण है कि महादेवी जी के नारी पात्रों को नारी प्रवचन की प्रकृति माना जाता है। उसे एक व्यक्ति के रूप में मुक्त करना।

संदर्भ:

१. भावना पांडेय (२०१७), 'महादेवी के नारी संबंधी रेखाचित्रों में स्त्री मुक्ति और विमर्श के बहुआयामी स्वर', इनोवेशन दी रीसर्च कंसेप्ट, २(१०); १९४-१९७
२. अतीत की चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण द्र २०००, पृष्ट द्र ४८.

३. साहीन जहाँ और फुल बिहारी वर्मा (१९९३-९४), 'अतीत के चलचित्र का विश्लेषण', एम. फिल. उपाधि हेतु, अलीगढ मुस्लिम विश्व विद्यालय, अलीगढ.
४. मीरा रंग (२०२०), 'महादेवी वर्मा की रचना 'अतीत के चलचित्र' की स्त्रियां और पितृसत्ताक भारतीय समाज', मेरारंग.इन
५. महादेवी वर्मा (१९४१), अतीत के चलचित्र, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहबाद : १९५
६. महादेवी वर्मा (१९४१), अतीत के चलचित्र, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहबाद : १०४